सूरह — एक कहानी

सूरह नूह

नूह (अलैहि0)

पूरा सफ़र — 950 साल, और इस्तिग़फ़ार का ख़ज़ाना —
जैसे कोई बड़े प्यार से बच्चे को सुनाता है

सूरह नं. 71 • 28 आयतें • मक्की

नूरानी इल्म
nooraniilm.com • मुफ़्त सदक़ा-ए-जारिया ईबुक

एक नज़र में सूरह

इन्ना अर्सल्ना नूहन इला क़ौमिही अन अन्ज़िर क़ौमक
1. बेशक हमने नूह को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा कि अपनी क़ौम को डराओ।

फ़-क़ुल्तुस्-तग़्फ़िरू रब्बकुम इन्नहू कान ग़फ़्फ़ारा
10. तो मैंने कहा: अपने रब से मग़फ़िरत माँगो, बेशक वो बड़ा बख़्शने वाला है।

युर्सिलिस्-समा-अ 'अलैकुम मिद्रारा
11. वो तुम पर मूसलाधार बारिश बरसाएगा।

मा लकुम ला तर्जून लिल्लाहि वक़ारा
13. तुम्हें क्या हुआ कि तुम अल्लाह की अज़मत नहीं मानते?

व क़द ख़लक़कुम अत्वारा
14. हालाँकि उसने तुम्हें मरहलों में बनाया।

रब्बिग़्-फ़िर ली व लि-वालिदय्य व लि-मन दख़ल बैतिय मु'मिना
28. ऐ रब, मुझे, मेरे माँ-बाप को, और मोमिन हो कर मेरे घर आने वाले को बख़्श दे।

नौ सौ पचास साल

बेटा, आज की कहानी इंसानी तारीख़ के सबसे लंबे सब्र के बारे में है — और पूरी सूरह उसी शख़्स की ज़ुबानी सुनाई गई है जिसने इसे जिया।

'इन्ना अर्सल्ना नूहन इला क़ौमिही अन अन्ज़िर क़ौमक मिन क़ब्लि अंय्-य'तियहुम 'अज़ाबुन अलीम — बेशक हमने नूह को उनकी क़ौम की तरफ़ भेजा: अपनी क़ौम को डराओ, इस से पहले कि उन पर दर्दनाक अज़ाब आए।' ग़ौर कीजिए, बेटा, कि मिशन रहमत से शुरू होता है: तंबीह अज़ाब से **पहले** भेजी गई, ताकि उसकी नौबत ही न आए।

और उन्होंने कितनी देर तंबीह की? क़ुरआन कहीं और बताता है: वो अपनी क़ौम में 'एक हज़ार साल, पचास कम' रहे — **नौ सौ पचास साल** बुलाते रहे। बेटा, रुक कर उस अदद को थामने की कोशिश कीजिए। नौ साल नहीं। नब्बे नहीं। साढ़े नौ सदियाँ

वही पैग़ाम, वही ज़िद्द वाली क़ौम को, जब कि तक़रीबन कोई जवाब नहीं दे रहा था।

और उन्होंने शुरुआत कैसे की? 'या क़ौमी इन्नी लकुम नज़ीरुम्-मुबीन — ऐ मेरी क़ौम, मैं तुम्हारे लिए एक खुला डराने वाला हूँ: कि अल्लाह की इबादत करो, और उस से डरो, और मेरी इताअत करो।' बेटा, 'या क़ौमी' — ऐ **मेरी** क़ौम — की शफ़क़त देखिए। 'ऐ मुनकिरो' नहीं। हर नबी ने उन्हीं लोगों को जो उसे सताते थे, अपनेपन के अल्फ़ाज़ से मुख़ातिब किया। यही सची दावह का लहजा है: मैं तुम में से हूँ, और मैं तुम्हारी भलाई चाहता हूँ।

हर तरीक़ा, हर घड़ी

फिर नूह (अलैहि0) अपने रब के सामने अपनी रिपोर्ट पेश करते हैं — और ये कोशिश का एक शाहकार है, बेटा। सुनिए उन्होंने कितने तरीक़े आज़माए:

'क़ाल रब्बि इन्नी द'अवतु क़ौमी लैलंव्-व नहारा — मेरे रब, मैंने अपनी क़ौम को रात और दिन बुलाया।' फिर: 'सुम्म इन्नी द'अवतुहुम जिहारा — फिर मैंने उन्हें सर-ए-आम, खुले तौर पर बुलाया।' फिर: 'सुम्म इन्नी आ'लन्तु लहुम व अस्रर्तु लहुम इस्रारा — फिर मैंने उनके सामने एलान किया, और उनसे छुप कर, पोशीदा भी बात की।'

बेटा, ज़रिये गिनिए: दिन और रात, सर-ए-आम और पोशीदा, एलान और ख़ामोश गुफ़्तगू। उन्होंने अपने तरीक़े, अपने औक़ात, अपना लहजा बदला — सब कुछ, सिवाए अपने पैग़ाम के। यही हर उस्ताद, वालिद और मुस्लेह की सुन्नत है: इस बात में लचकदार रहो कि **कैसे** कहते हो, और इस में ना-क़ाबिल-ए-हिलान कि **क्या** कहते हो।

और उनका जवाब? 'फ़-लम यज़िद्हुम दु'आ-ई इल्ला फ़िरारा — मेरे बुलाने ने उन्हें सिर्फ़ भागने में बढ़ा दिया।' और फिर एक ऐसा बयान कि आप देख सकते हैं: 'व इन्नी कुल्लमा द'अवतुहुम लि-तग़्फ़िर लहुम ज'अलू असाबि'अहुम फ़ी आज़ानिहिम — जब भी मैंने उन्हें बुलाया ताकि **आप उन्हें बख़्श दें**, उन्होंने अपनी उँगलियाँ अपने कानों में ठूँस लीं — वस्तग़्शौ सियाबहुम — और अपने कपड़ों से ख़ुद को ढाँप लिया — व असर्रू वस्तक्बरुस्-तिक्बारा — और वो अड़े रहे, और बड़ी शिद्दत से तकब्बुर किया।'

बेटा, उस बीच वाली लाइन की त्रासदी महसूस कीजिए: वो उन्हें इसलिए बुला रहे थे ताकि **अल्लाह उन्हें बख़्श दें** — और उन्होंने अपनी उँगलियों से कान बंद कर लिए। उन्होंने सिर्फ़ पैग़ाम रद्द नहीं किया; उन्होंने उसे **सुनने** से इनकार किया। हिदायत का सबसे बड़ा दुश्मन, बेटा, कोई मज़बूत जवाबी दलील नहीं — वो एक बंद कान और एक उठी हुई ठोड़ी है। और इसकी आज की शक्ल पहचानना आसान है: वो शख़्स जो आयत आते ही रील स्क्रॉल कर देता है, दीन की बात आते ही मौज़ू बदल देता है।

इस्तिग़फ़ार में छुपा ख़ज़ाना

और अब, बेटा, वो हिस्सा आता है जिसने इस सूरह को हर उस मोमिन का महबूब बना दिया जिसका सीना तंग हो, जेब ख़ाली हो, या घर बे-औलाद हो।

'फ़-क़ुल्तुस्-तग़्फ़िरू रब्बकुम इन्नहू कान ग़फ़्फ़ारा — मैंने कहा: अपने रब से मग़फ़िरत माँगो; बेशक वो ग़फ़्फ़ार है — हमेशा, बे-इंतिहा बख़्शने वाला। युर्सिलिस्-समा-अ 'अलैकुम मिद्रारा — वो तुम पर आसमान से मूसलाधार बारिश बरसाएगा। व युम्दिद्कुम बि-अम्वालिंव्-व बनीन — और तुम्हें माल और औलाद में बढ़ाएगा — व यज्'अल लकुम जन्नातिंव्-व यज्'अल लकुम अन्हारा — और तुम्हारे लिए बाग़ बनाएगा और तुम्हारे लिए नहरें बनाएगा।'

उस फ़ेहरिस्त को दोबारा पढ़िए, बेटा: बारिश, माल, औलाद, बाग़, नहरें। ये ठीक वही चीज़ें हैं जिनके पीछे लोग सौ दरवाज़ों से भागते हैं — और अल्लाह उन्हें सब **एक** दरवाज़े से पेश करते हैं: **इस्तिग़फ़ार**। गुनाह, बेटा, एक ज़िंदगी पर सूखा हैं; मग़फ़िरत वो बारिश है जो उसे ख़त्म करती है।

और ये महज़ शायराना बात नहीं। मशहूर है कि इमाम हसन बसरी (रह0) के पास एक ही महफ़िल में मुख़्तलिफ़ लोग आए: एक ने सूखे की शिकायत की, एक ने ग़ुरबत की, एक ने बे-औलादी की, एक ने बंजर ज़मीन की। हर एक को उन्होंने कहा: 'अल्लाह से मग़फ़िरत माँगो' — और जब पूछा गया कि एक नुस्ख़ा चार बीमारियों के लिए क्यों, तो उन्होंने यही आयतें पढ़ दीं।

और नबी ﷺ ने हमें सिखाया: जो शख़्स इस्तिग़फ़ार को लाज़िम पकड़ ले, अल्लाह उसके लिए हर तंगी से निकलने का रास्ता, हर फ़िक्र से राहत, और वहाँ से रिज़्क़ बनाएँगे जहाँ से उसे गुमान भी न हो।

तो बेटा, इस्तिग़फ़ार को अपने दिन का बैकग्राउंड म्यूज़िक बना लीजिए: चलते हुए, इंतिज़ार करते हुए, काम करते हुए। 'अस्तग़फ़िरुल्लाह रब्बी मिन कुल्लि ज़म्बिंव्-व अतूबु इलैह।' इसमें कुछ ख़र्च नहीं होता, और ये आसमान खोल देता है।

फिर नूह उनसे वो सवाल पूछते हैं जो उनके पूरे इनकार की वज़ाहत कर देता है: 'मा लकुम ला तर्जूना लिल्लाहि वक़ारा — तुम्हें क्या हुआ कि तुम अल्लाह की अज़मत नहीं मानते?' वक़ार, बेटा — वज़न, अज़मत। उनका असल मसला दलील की कमी न थी; ये था कि **अल्लाह उनके दिलों में छोटा था।** और जब अल्लाह दिल में छोटा हो, तो बाक़ी हर चीज़ बड़ी लगती है: लोगों की राय, पैसा, ख़तरे, शर्मिंदगी। अल्लाह को उनका पूरा वज़न दीजिए, और पूरी दुनिया अपने सही साइज़ पर सिमट जाती है।

अपने आप को देखो, आसमान को देखो

नूह (अलैहि0) फिर उनसे वैसे ही बहस करते हैं जैसे क़ुरआन हमेशा करता है — उस चीज़ की तरफ़ इशारा कर के जो वो पहले से देख रहे हैं: 'व क़द ख़लक़कुम अत्वारा — हालाँकि उसने तुम्हें मरहलों में बनाया।' बेटा, एक बूँद, फिर जमा हुआ ख़ून, फिर हड्डियाँ जिनपर गोश्त चढ़ाया गया, फिर बच्चा, फिर जवानी, फिर बुढ़ापा — तुम ख़ुद मोजिज़ों की एक ज़ंजीर हो जिसे तुमने तरतीब नहीं दिया।

'अ लम तरौ कैफ़ ख़लक़ल्लाहु सब्अ समावातिन तिबाक़ा — क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने सात आसमान तह-ब-तह कैसे बनाए — व ज'अलल्-क़मर फ़ीहिन्न नूरा — और चाँद को उन में रौशनी बनाया — व ज'अलश्-शम्स सिराजा — और सूरज को एक चिराग़ बनाया?'

बेटा, वो बारीकी ग़ौर कीजिए जिसे उलमा मुद्दतों से नुमायाँ करते आए हैं: चाँद को **नूर** कहा गया — मुनाकिस रौशनी — और सूरज को **सिराज** — एक जलता चिराग़, एक मंबा। दोनों को दो मुख़्तलिफ़ लफ़्ज़ों से बयान किया गया, ठीक उनकी दो

मुख़्तलिफ़ फ़ितरतों के मुताबिक़।

'वल्लाहु अम्बतकुम मिनल्-अर्ज़ि नबाता — और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से एक पौदे की तरह उगाया — सुम्म युʻईदुकुम फ़ीहा व युख़्रिजुकुम इख़्राजा — फिर वो तुम्हें उसी में लौटाएँगे, और दोबारा निकालेंगे।' क्या बयान है एक इंसानी ज़िंदगी का, बेटा: तुम उस मिट्टी से उगे जिसने तुम्हारे माँ-बाप को खिलाया, तुम उसी मिट्टी में लौटाए जाओगे, और उसी से उठाए जाओगे। बिल्कुल उस बीज की तरह जिसे तुमने हज़ार बार फूटते देखा — तो फिर अपने दोबारा ज़िंदा होने पर यक़ीन मुश्किल क्यों?

दुनिया में शिर्क पहली बार कैसे आया

फिर सूरह एक निहायत अहम चीज़ दर्ज करती है — इंसानी तारीख़ के बिल्कुल पहले बुतों के नाम: 'व क़ालू ला तज़रुन्न आलिहतकुम — और उन्होंने कहा: अपने माबूदों को मत छोड़ो; और वद्द को मत छोड़ो, न सुवा' को, न यग़ूस और यʻऊक़ और नस्र को।'

अब, बेटा, ग़ौर से सुनिए कि ये बुत वुजूद में कैसे आए, क्योंकि ये वज़ाहत — इब्ने अब्बास (रज़ि0) से मरवी और सहीह अल-बुख़ारी में दर्ज — पूरे क़ुरआन के सबसे अहम सबक़ों में से एक है।

ये पाँच नाम, उन्होंने बयान किया, नूह की क़ौम के **नेक लोगों** के नाम थे। जब वो फ़ौत हुए, तो शैतान ने उनकी क़ौम के दिल में डाला: जिन जगहों पर वो बैठते थे वहाँ उनके मुजस्समे खड़े कर दो, और उनके नाम पर रख दो — ताकि तुम्हें वैसे ही इबादत की तरग़ीब हो जैसे वो करते थे। और उन्होंने ऐसा किया। और उस **पहली नस्ल में, किसी ने उन बुतों की इबादत नहीं की।** वो सिर्फ़ याद-दहानियाँ थे।

मगर फिर वो नस्ल गुज़र गई। और अगली नस्ल उन बुतों को देखते हुए बड़ी हुई, उनका मक़सद जाने बग़ैर। और जब इल्म ख़त्म हो गया — जैसा रिवायत कहती है — तो उन बुतों की इबादत की जाने लगी।

बेटा, इसे गहराई से जज़्ब कीजिए। शिर्क दुनिया में बुरे लोगों के ज़रिए या ख़ुदा से नफ़रत के ज़रिए दाख़िल नहीं हुआ। वो **मोहब्बत** के ज़रिए दाख़िल हुआ — नेक

लोगों से हद से बढ़ी हुई मोहब्बत — और **वक़्त** के ज़रिए, और **इल्म के ख़ात्मे** के ज़रिए। तीन बे-ज़रर दिखने वाले अज्ज़ा।

इसी लिए ये दीन छोटे दरवाज़ों की भी हिफ़ाज़त करता है: इसी लिए नबी ﷺ ने क़ब्रों को नमाज़ की जगह बनाने से मना किया, और हद से ज़्यादा तारीफ़ से ख़बरदार किया — 'मेरी तारीफ़ में उस तरह हद से मत बढ़ो जैसे ईसाइयों ने मरयम के बेटे की तारीफ़ में हद से बढ़ा; मैं तो बस एक बंदा हूँ।' बेटा, नेक लोगों की इज़्ज़त कीजिए, उनसे मोहब्बत कीजिए, उनकी पैरवी कीजिए — और उस मोहब्बत को कभी एक इंच भी इबादत की तरफ़ खिसकने मत दीजिए। एक यादगार से एक बुत तक का रास्ता एक दिन में नहीं बना।

वो दुआ जो आज भी हमें पनाह देती है

सदियों के बुलाने के बाद, सिर्फ़ चंद लोग ईमान लाए। और आख़िर-कार नूह (अलैहि0) ने एक ऐसी दुआ की जिसे अल्लाह ने क़ुबूल फ़रमाया: 'रब्बि ला तज़र 'अलल्-अर्ज़ि मिनल्-काफ़िरीन दय्यारा — मेरे रब, ज़मीन पर मुनकिरों में से एक बसने वाला भी मत छोड़। इन्नक इन तज़र्हुम युज़िल्लू 'इबादक — बेशक अगर आप उन्हें छोड़ देंगे, तो वो आपके बंदों को गुमराह करेंगे।'

बेटा, ये ज़ाती इंतिक़ाम न था — ये उस शख़्स का फ़ैसला था जिसने उन दिलों का साढ़े नौ सदियों तक मुतालआ किया था। अल्लाह उन्हें पहले ही बता चुके थे: 'तुम्हारी क़ौम में से कोई ईमान नहीं लाएगा सिवाए उन के जो पहले ईमान ला चुके।' तो तूफ़ान आया, और कश्ती मोमिनीन को ले गई।

और फिर, बेटा, वो ख़ूबसूरत आयत देखिए जिस पर इस लंबे जद्दो-जहद वाली सूरह का इख़्तिताम होता है — उनकी आख़िरी दुआ, और इसमें **आप भी शामिल हैं**:

'रब्बिग़्-फ़िर ली व लि-वालिदय्य — मेरे रब, मुझे और मेरे माँ-बाप को बख़्श दे — व लि-मन दख़ल बैतिय मु'मिना — और उस को जो मोमिन हो कर मेरे घर आए — व लिल्-मु'मिनीन वल्-मु'मिनात — और तमाम मोमिन मर्दों और तमाम मोमिन औरतों को।'

बेटा, इसके साथ बैठिए। साढ़े नौ सदियों के इनकार, मज़ाक़ और तन्हाई के बाद — इस आदमी की आख़िरी दर्ज दुआ अपने लिए, अपने माँ-बाप के लिए, और फिर **हर मोमिन मर्द और हर मोमिन औरत** के लिए मग़फ़िरत की दरख़्वास्त है — क़ियामत तक, हर मुल्क में।

यानी हज़ारों साल पहले, एक नबी ने आपके लिए दुआ की। आपका नाम उस फ़ेहरिस्त में है। और ये आपको सिखाता है कि अपनी दुआएँ कैसे ख़त्म करनी चाहिए: कभी अपने आप पर, या अपने घर पर मत रुकिए — दायरा उन तक बढ़ाइए जिन्हें आप कभी मिले ही नहीं।

इस सूरह से क्या सीखा

1. तंबीह अज़ाब से पहले भेजी जाती है — हर तंबीह जो आप तक पहुँचती है, ख़ुद एक रहमत है।

2. तरीक़े बदलिए, पैग़ाम नहीं: दिन-रात, खुले-आम और पोशीदा — 'कैसे' में लचकदार, 'क्या' में ना-क़ाबिल-ए-हिलान।

3. हिदायत का सबसे बड़ा दुश्मन जवाबी दलील नहीं, बंद कान है — देखिए कि आप किस चीज़ को सुनने से कतराते हैं।

4. इस्तिग़फ़ार एक नुस्ख़ा है चार बीमारियों के लिए: बारिश, माल, औलाद और बाग़ — सब एक ही दरवाज़े से।

5. असल मसला ये है कि अल्लाह दिल में छोटे हो जाएँ — उन्हें उनका पूरा वज़न दीजिए और बाक़ी दुनिया अपने साइज़ पर आ जाएगी।

6. शिर्क मोहब्बत, वक़्त और इल्म के ख़ात्मे से आया — नेक लोगों से मोहब्बत कीजिए, मगर उसे कभी इबादत की तरफ़ खिसकने मत दीजिए।

7. अपनी दुआएँ अपने घर पर मत रोकिए — नूह (अलैहि0) की आख़िरी दुआ में आपका नाम भी है।

रब्बिग़्-फ़िर ली व लि-वालिदय्य व लिल-मुमिनीन वल-मुमिनात — या अल्लाह, हमें इस्तिग़्फ़ार का ख़ज़ाना अता फ़रमाइए और हमारे दिलों में अपनी अज़मत बड़ी कर दीजिए। आमीन।